ग्रामोभ्युदयादेव देशोभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे

निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 25 अंकः 65 बुलेटिन अवधिः 24–28 दिसम्बर 2016 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 23 दिसम्बर, 2016

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर **कृषि मौसम विज्ञान विभाग** में स्थित **कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर** द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	24–12–2016	25–12–2016	26–12–2016	27–12–2016	28–12–2016
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	24	24	23	21	21
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	06	06	07	07	07
बादल आच्छादन	साफ	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	90	90	90	90	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	55	50	45	50
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	06	08	06	08	06
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	दक्षिण–पूर्व	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (16 से 22 दिसम्बर, 2016 सुबह 8:30 तक) में आसमान में बादल छाये रहे तथा 0.0 मिमी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 17.0 से 24.6 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 5.4 से 7.0 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 91 से 97 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 39 से 56 प्रतिशत एवं हवा 1.5 से 3.2 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पूर्व–दक्षिण–पूर्व व पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- सरसों में चित्रित बग के नियत्रण हेतु डाई क्लोरवॉस 76 ई0सी0 का 627 मिली/हेक्टेयश्र की दर से छिड़काव करे।

- सरसों में माहुं का प्रकोप होने पर थियामेथोक्जाम 25 डब्लूएसजी 50–100 ग्रा0 प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे। इसकी प्रतीक्षा अवधि 21 दिन है।
- जौं की पछेती दशा में बुवाई हेतु संस्तुत किस्में– ज्योति, प्रीति, मंजुला, जागृति का चुनाव करें। प्रति हैक्टेयर 100–110 कि0ग्रा0 बीज का उपयोग करें। 18–20 से0मी0 के कतारों में बुवाई करें। बुवाई दिसम्बर के दूसरे पखवाड़े तक अवश्य पूरा कर लें।
- गेहूँ की बुवाई से पूर्व बीज उपचार अवश्य करें।
- गेहॅू के बीज का उपचार कार्बोक्सिन 2ग्राम/किग्रा से या टेबूकुनाजोल 1.5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से करें।
- समय से बोए गए गेहूँ में बुवाई के 20–25 दिन बाद आवश्यकतानुसार प्रथम सिंचाई करें। प्रथम सिंचाई के 3–4 दिन बाद जब खेत चलने लायक हो जाए तब बचे हुए नाइट्रोजन की आधी मात्रा का टॉपड्रेसिंग अपराहन में करना अधिक प्रभावी होता है।
- गेहूँ में खरपतवार नियंत्रण हेतु दो निराई–गुड़ाई पर्याप्त होता है। पहली निराई–गुड़ाई बुवाई के 25–30 दिन बाद तथा दूसरी बुवाई के 45–50 दिन बाद करें। इससे खरपतवार तो नियंत्रण होता ही हैं साथ ही भूमि में समुचित हवा के संचार होने से कल्ले अधिक निकलते है।
- समय से बोए गई चनें की फसल में दो बार निराई–गुड़ाई करें। पहली बुवाई के 25–30 दिन बाद तथा दूसरा पहली सिंचाई के बाद बुवाई के 45–50 दिन बाद करें।

उद्यान प्रबन्धः

- आलू में पछेती झुलसा रोग के नियत्रण हेतु साइमोकजेनिल 8 प्रतिशत + मैनकोजेब 64 प्रतिशत के मिश्रण का 2 ग्राम/ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे। इस रसायन का दो छिड़काव लगातार न करे। दो छिड़काव के मध्य में मेनकाजेब 2.5 ग्राम/ली0 (या कॉपर ऑक्सी क्लोराइड 3 ग्राम/ली0) का छिड़काव करे।
- गोभी वर्गी फसलों में पत्ति धब्बा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्राम/ली0 की दर से छिड़काव करें।
- टमाटर में फल बेधक का प्रकोप होने पर, क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 18.5 एस0सी0, 150मि0ली0/है0 के छिड़काव के तीन दिन बाद या इन्डोक्साकार्ज 14.5 एस0सी0, 500मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल का उपयोग करें।
- टमाटर की फसल में सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर सायान्ट्रानिलीप्रोले 10.26 ओ0डी0, 900 मि0ली0/है0 या थियामेथोक्जाम 25 डब्लू0एस0जी0, 200 ग्राम/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद ही फल को खाने हेतु प्रयोग करें।
- बैंगन में तना एवं फल बेधक के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस0जी0 200ग्रा0/है0, साइपरमैथ्रिन 25इसी 200मि0ली0/है0, लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 सी0एस0 300मि0ली0/है0 की दर से अन्तिम छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का उपयोग करे।
- मिर्च में थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5 इसी 300मि0ली0/है0 या फिप्रोनिल 5 एस0सी0 1लीटर/है0 की दर से छिड़काव के सात दिन बाद ही मिर्च का प्रयोग करें।
- मिर्च में माइट के नियंत्रण के लिए डाईफेन्थयुरान 50डब्लू0पी0 600ग्रा0/है0या लैम्डासाइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद फल का प्रयोग करें।
- प्याज में थ्रिप्स के नियंत्रण के लिए लैम्डा साइहैलोथ्रिन 5इसी 300मि0ली0/है0 की दर से छिड़काव के पाँच दिन बाद तथा पर्पिल ब्लॉच के नियंत्रण हेतु डिफेनोकोनाजोल 25इसी 0.1प्रतिशत या कीटाजीन 48 इसी 0.2 प्रतिशत का छिड़काव के 20 दिन बाद फल का उपयोग करें।
- प्रति पेड़ प्रति वर्ष आयु के लिए 75 ग्राम फॉस्फोरस एवं 100ग्राम पोटाश देते हैं। इन मात्राओं को 10 वर्ष की आयु तक बढ़ाते रहते हैं और उसके पश्चात् 10 वर्ष एवं उससे अधिक आयु के पेड़ों में 750 ग्राम फॉस्फोरस अर्थात 4.650 कि0ग्रा0 सुपरफॉस्फेट (सिंगल) तथा 1000ग्राम पोटाश अर्थात 1.6 कि0ग्रा0 म्यूरेट आफ पोटाश प्रति पेड़ के हिसाब से थाले में (तने से 1 मीटर छोड़कर) मिलाकर गहरी गुड़ाई करें। इसी के साथ अच्छी सड़ी गोबर की खाद 10 कि0ग्रा0 प्रति पौंधा प्रति वर्ष आयु के अनुसार बढ़ाते रहें तथा 10 वर्ष पश्चात् 100 कि0ग्रा0 गोबर की खाद प्रति पौधा प्रयोग करें।
- करी कीट के नियंत्रण हेतु पालीथीन स्ट्रिप का प्रयोग करें ताकि इन कीटों को पौधों के ऊपर चढ़ने से रोका जा सके। इसके लिए 25 से 30 सेमी चौड़ी पालीथीन लेकर पौधों के मुख्य तना पर जमीन की सतह से लगभग 30–40 सेमी ऊपर पौधों के तनों के चारों ओर से लपेट दें। लपेटने के उपरान्त पालीथीन की निचली तथा ऊपरी सतह पर ग्रीस या खराब तेल का प्रयोग करते हुए पालीथीन के दोनों शिरों को रस्सी से बांध दें।

पशुपालन प्रबन्धः

- ❖ सरदी से बचाव के लिए पशुघर का प्रबंध ठीक से करें। गाय–भैंस को शीतला रोग (रिंडर पेस्ट) का टीका लगवाए।
- ❖ पशुओं को ठंड से बचाव हेतु सूखी घास, पुवाल जो जानवरों के खाने के उपयोग में नहीं आती को बिछावन के रूप में प्रयोग करें। खिड़की दरवाजों पर त्रिपाल लगा दें ताकि ठंडी हवा प्रवेश न करें।
- ❖ इस बदलते मौसम में नवजात पशुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पशुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।
- ❖ जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के नीचे सूखा चारा बिछा दें। प्रसव के उपरांत स्वच्छता का पूरा ध्यान रखें। ठंड का समय आ गया है अतः ठंड से बचाव हेतु पशुपालक इसकी ओर ध्यान दें।
- ❖ भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होता है, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरा का होना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान कर सकते है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं।
- ❖ पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।
- ❖ मुर्गियों में फफूँदजनित आहार देने से अपलाटॉक्सीकोशिस हो जाती है जिसकी वजह से काफी संख्या में उनकी मृत्यु होने की संभावना होती है। ऐसे में मुर्गियों को पशुचिकितसक की सलाह से दवा दें।
- ❖ पशुओं को हरा चारा में सूखा चारा अवश्य मिलाकर दें। अन्यथा आफरा (टिम्पेती) हो सकती है व पनीले दस्त हो सकते है, जिसकी वजह से उनकी मृत्यु हो सकती है।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर